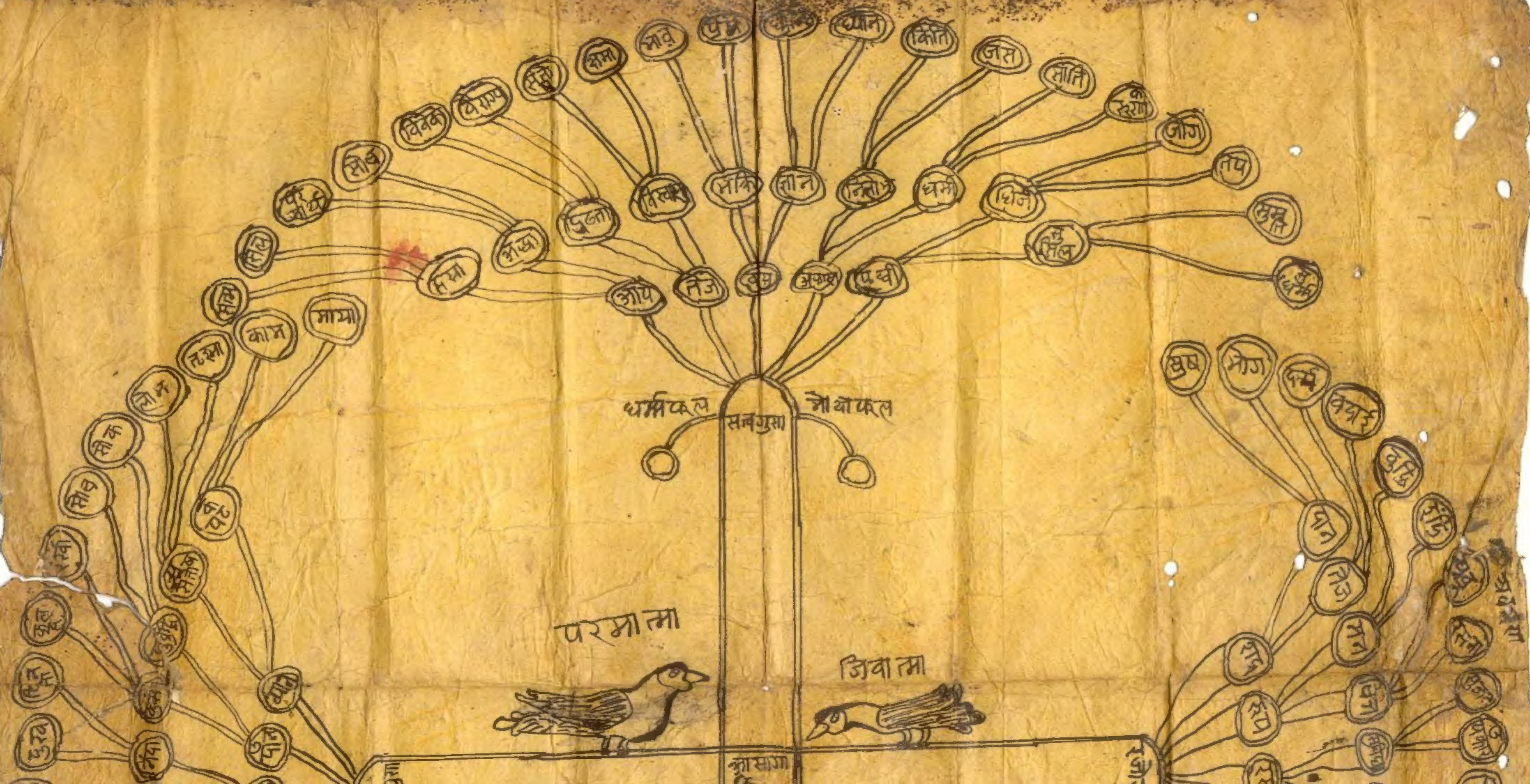


45

845	I
589	
1845	





तस्मात्
म

कर्महल

॥ दोहा ॥ पांचुत त्वगु नती तदे यव न प्रकृ तिसु जाना ॥
आसा जु त न दोष छि वसे छ रि फल सु परका न ॥ १ ॥ श्री
स्वाप्ना नन्द कथा करि छे ज सु मन मल धारि ॥ सरी रव कव
न न कि छ रि प्रसाद सुख सा र ॥ इति का मा वृ क्ष वर्ण न समाप्ता ॥

२७५

कामाक्षी

पुन्यफले

निमिगुगा

पापफल

अर्थफल